महाभारत का रचना-काल

संस्कृत साहित्य के उपजीव्य ग्रन्थों में रामायण के बाद महाभारत का नाम आता है। इससे कथावस्तु लेकर परवर्ती असंख्य कवियों ने काव्य, नाटक, चम्पू, कथा, आख्यायिका आदि की रचना की है। विश्व साहित्य में महाभारत बृहत्तम ग्रन्थ है। भारतीय साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'भगवद्गीता' इसी का एक अंश है। इसके अतिरिक्त विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज तथा गजेन्द्र मोक्ष जैसे आध्यात्मिक और भक्तिपूर्ण ग्रन्थ इसी के अंश हैं। इन्हीं पाँच ग्रन्थों को 'पञ्चरत्न' कहते हैं। इन्हीं गुणों के कारण महाभारत 'पञ्चमवेद' के नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति को समग्र रूप में प्रस्तुत करता है। इसी कारण इस ग्रन्थ के बारे में यह कथन नितान्त समीचीन है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में जो विवेचन यहाँ है, वही अन्यत्र भी है और जो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है।—

धर्मे ह्यर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥

इस महनीय ग्रन्थ के रचयिता महर्षि व्यास हैं। इनका प्रथम नाम कृष्णद्वैपायन था; क्योंकि ये एक द्वीप में उत्पन्न हुए थे और इनका रंग कृष्ण था।

सम्प्रति उपलब्ध महाभारत लक्ष श्लोकात्मक है। इसी कारण इसे "शतसाहस्री-संहिता" भी कहते हैं। गुप्तकालीन शिलालेखों में शतसाहस्रीसंहिता का उल्लेख है। यह स्वरूप अठारह पर्वों का न होकर हरिवंश से संयुक्त करने पर ही सिद्ध होता है। परिशिष्ट होने से हरिवंश भी महाभारत का अविभाज्य अंग माना जाता है और इन दोनों को मिलाने पर ही एकलाख श्लोक की संख्या निर्णीत होती है।

महाभारत का वर्तमान स्वरूप तीन विकास क्रमों का परिणाम है। आरम्भ में व्यास ने पाण्डवों और कौरवों की कथा के रूप में जो ग्रन्थ लिखा उसका नाम जय था। वे इसे इतिहास कहते हैं —

जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा। (महाभारत/आदि-पर्व)

महाभारत के मङ्गल श्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके कवि के द्वारा 'जय' के निर्माण का उल्लेख है —

"नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं वन्दे ततो जयमुदीरयेत्॥"

यही 'जय' महाभारत का मूल प्रतीत होता है। कौरवों पर पाण्डवों की विजय के वर्णन के कारण ही इस ग्रन्थ का ऐसा नामकरण किया गया है। इसमें 8800 श्लोक थे — अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।

भारत - जय के विकसित रूप का नाम भारत पड़ा। अर्जुन के पौत्र परीक्षित की मृत्यु साँप के काटने से हुई थी। अतः पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए जनमेजय ने साँपों को नष्ट करने के लिए नागयज्ञ किया। इस अवसर पर उपस्थित महर्षि व्यास से कौरवों और पाण्डवों के युद्ध का वर्णन सुनाने के लिए जनमेजय ने प्रार्थना की। व्यास ने अपने शिष्य वैशम्पायन को 'जय' महाकाव्य सुनाने का आदेश दिया। जनमेजय ने इसके श्रवण-क्रम में विभिन्न स्थलों पर बहुत से प्रश्न किए जिनका उत्तर वैशम्पायन ने दिया। इन प्रश्नों और उत्तरों को मिलाने पर 'जय' का कलेवर बहुत विस्तृत हो गया और इसका नाम 'भारत' पड़ा। अब इसमें 24 हजार श्लोक हो गए, किन्तु इसमें उपाख्यान नहीं थे -

चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः॥

महाभारत :-

'जय' के तीसरे विकसित स्वरूप का नाम 'महाभारत' पड़ा। जनमेजय के नागयज्ञ के कुछ समय बाद शौनक ऋषि ने नैमिषारण्य में 12 वर्षों तक चलने वाला यज्ञ किया। इस अवसर पर उपस्थित बहुत से ऋषियों में रोमहर्षण ऋषि के पुत्र सौति ऋषि भी थे। सौति ने जनमेजय के नागयज्ञ के अवसर पर वैशम्पायन के द्वारा कथित कौरवों और पाण्डवों के युद्ध वर्णन रूप जय की कथा और जनमेजय तथा वैशम्पायन के सम्वाद को भी सुना था। उस 'भारत' की कथा को सौति ने शौनक ऋषि के आग्रह पर उसी रूप में सुनाया। शौनक ने बीच-बीच में बहुत से प्रश्न किए, जिनका उत्तर विस्तार से देते हुए सौति ने अनेक आख्यान भी सुनाए। सौति के इस वर्णन में हरिवंश भी सम्मिलित है। इसका स्वरूप महनीय हो जाने के कारण इसे महाभारत कहा जाने लगा। इसमें आदि, सभा, उद्योग, भीष्मादि 18 पर्व हैं, जिनमें नीति, धर्म, आचार, राजनीति, अध्यात्म आदि विविध विषयों पर मनोरम तथा विस्तृत विवेचन है। इसमें श्लोकों की संख्या 1 लाख हो गई। कहा जाता है - महत्त्वाद् भारतत्वाच्च महाभारतमुच्यते।

महाभारत का रचना-काल

महर्षि व्यास द्वारा मूल रूप में रचित 'जय' कब 'महाभारत' बन गया, इस विषय में आज तक समालोचकों में ऐकमत्य नहीं हो पाया है। भारतीय परम्परा के अनुसार कौरव-पाण्डवों का युद्ध द्वापर के अन्त में अर्थात् कलियुग के आरम्भ होने से पूर्व में हुआ था, ऐसी ही मान्यता है। कलियुग का आरम्भ

Scanned with CamScanner

3101 ई० पू० में हुआ था। अतः इसके कुछ बाद, यानी, 3000 ई० पू० महाभारत का समय माना जाना चाहिए।

आधुनिक विद्वान् महाभारत का समय इतना पूर्व मानने के पक्ष में नहीं हैं। अतः आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रमाणों के आधार पर इस सन्दर्भ में कई तथ्य उपस्थापित किए जाते हैं, जैसे —

(1) संस्कृत साहित्य के कवियों में अश्वघोष का काल प्रथम शताब्दी मान्य है, क्योंकि वे राजा कनिष्क (78 ई०) के गुरु और आश्रितकवि थे। अश्वघोष ने अपने ग्रन्थ 'वज्रसूची उपनिषद्' में महाभारत के शान्तिपर्व तथा हरिवंश से अनेक पद्य उद्धृत किए हैं। अतः उससे पूर्व महाभारत की रचना हुई।

(2) संस्कृत-साहित्य में महाकवि भास प्राचीनतम नाटककार माने जाते हैं। महाभारत से कथावस्तु लेकर उन्होंने दूतकाव्य, दूतघटोत्कच तथा कर्णभार आदि सात नाटक लिखे हैं। टी० गणपति शास्त्री से सहमत होते हुए अनेक विद्वान् भास का काल तृतीय शती ई० पू० निश्चित करते हैं। अतः उससे पूर्व महाभारत रचा गया।

(3) चन्द्रगुप्त मौर्य (323 ई० पू०) के दरबार में आने वाला यूनानी राजदूत मेगास्थनीज़ ने अपने भारत-विषयक ग्रन्थ में मथुरावासियों के द्वारा हिरैक्लीज़ के सम्मान एवं पूजा किए जाने का उल्लेख किया है। विद्वानों ने हिरैक्लीज़ को कृष्ण से अभिन्न माना है। अतः चन्द्रगुप्त मौर्य से पहले महाभारत की रचना हुई।

(4) सीरिया भाषा में प्राप्त महाभारत के शान्तिपर्व के तीन अध्यायों के विवरण के आधार पर हर्टेल महोदय प्रमाणित करते हैं कि प्रचलित महाभारत ई० पू० पाँचवीं शती में रचित महाभारत से भिन्न नहीं है।

(5) बौधायन धर्मसूत्र में महाभारत के ययाति उपाख्यान का एक श्लोक मिलता है। बौधायन गृह्यसूत्र में 'विष्णुसहस्रनाम' का उल्लेख है। गीता का "पत्रं पुष्पं फलं तोयम्" — यह पद्य भी वहाँ उद्धृत है। डॉ० बूलर ने बौधायन का काल ई० पू० 400 वर्ष प्रमाणित किया है।

(6) महर्षि पाणिनि (ई० पू० 500) ने अपनी रचना 'अष्टाध्यायी' में युधिष्ठिर, विदुर तथा महाभारत — इन शब्दों की निष्पत्ति के लिए सूत्र लिखे हैं। अतः पाणिनि से पूर्व महाभारत रचा गया।

(7) महाभारत के शान्ति-पर्व में विष्णु के दशावतार का वर्णन है, किन्तु

Scanned with CamScanner

अमें बुद्ध का नाम नहीं है। कृष्णावतार के बाद कल्कि-अवतार का वर्णन है। फलतः बुद्ध से आपरिचित महाभारत निश्चय ही बुद्ध से पहले की रचना है।

(8) ज्योतिषशास्त्र के प्रमाणों से भी महाभारत की रचना 500 ई० पू० की सिद्ध होती है।

अतः उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर महाभारत का रचना-काल 500 ई० पू० सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner